शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

वर्ष-२ अंक-८

माह : फरवरी २०२०

मिशन शिक्षण संवाद

बेसिक की उड़ान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-८

माह- फरवरी २०२०

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

बेसिक शिक्षा विभाग एक ऐसा विभाग है जो देश के भविष्य निर्माताओं की आधारशिला रखता है। यहाँ उन नन्हें मुन्नों को दिशा दिखाने का कार्य किया जाता है जो बड़े होकर देश के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। यदि इस स्तर से कोई कमी रह जाती है तो वह भविष्य में हमारे और देश के लिये अति कष्टदायी होती है।

ऐसी कोई कमी न रह जाये, इसके लिये एक ओर जहाँ उच्च स्तर पर महानिदेशक श्री विजय किरन आनंद जी व निदेशक डॉ0 सर्वेंद्र विक्रम बहादुर सिंह जी के द्वारा सहयोगी साहित्य, गतिविधि आधारित शिक्षा जैसे सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। तो वहीं इनकी आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिये अब हमारे शिक्षकों ने भी कमर कस ली है। गत कुछ वर्षों पर नज़र डाली जाये तो अन्तर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। बेसिक शिक्षा जगत का यह बदलता हुआ परिवेश इस बात का संकेत देता है कि अब हमारे शिक्षक कॉन्वेन्ट स्कूलों से लोहा लेने को आतुर हैं।

इस स्टेज पर ऐसा महसूस होता है कि भौतिक परिवेश के तौर पर हमारे विभाग में काफ़ी कुछ कायाकल्प हो चुका है। अब बारी है कि शैक्षिक गुणवत्ता की ओर ध्यान केन्द्रित करने की। लर्निंग आउटकम जैसी परीक्षाओं के माध्यम से अब हमने इस ओर कदम भी बढ़ा दिये हैं। आवश्यकता है इन प्रयासों को गति प्रदान करने की। ऐसे में हर कर्मठी शिक्षक को उक्त कार्यक्रमों के सहारे अपने विद्यालय व कक्षाओं में मनोवांछित परिणाम लाने के लिए हरसम्भव सहयोग व प्रयास करने की आवश्यकता है। क्योंकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य तभी पूर्ण हो सकता है जब प्राथमिक स्तर की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया बच्चों की समझ के साथ पूर्ण हो।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में जो शिक्षक नवाचारों का प्रयोग कर रहे हैं, नवीन युग की तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं, उनके प्रयासों का मिशन शिक्षण संवाद जिस प्रकार प्रचार प्रसार कर रहा है, वह निःसंन्देह प्रशंसनीय है। इस कार्य के लिये मैं मिशन टीम को बधाई देता हूँ और मिशन शिक्षण संवाद को पत्रिका के प्रकाशन के लिये शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

डा0 (अरविन्द कुमार पाठक)
ज़िला बेसिक शिक्षा अधिकारी
फीरोज़ाबाद

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद ने हमेशा एक ऐसे समाज की कल्पना की है जहाँ आपसी प्रेम, विश्वास के साथ सकारात्मक विचारों की शक्ति विद्यमान हो। यह कल्पना भले ही आज काल्पनिक लग रही हो, लेकिन कोशिश एक ऐसा शब्द है जो किसी भी कल्पना को यथार्थ रूप देने में सक्षम है।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार आज उस कल्पना को यथार्थ रूप देने के लिए लगातार स्वैच्छिक स्वयंसेवी के रूप में सतत प्रयत्नशील है, जहाँ न कोई पद हो, न कोई प्रतिष्ठा की चाहत हो और न ही कोई उपाधियों की महत्वाकांक्षाएँ हों। हो तो बस एक ही कोशिश हो कि हम सब मिलकर आपस में सीखते–सिखाते हुए समाज में शिक्षा और संस्कारों के माध्यम से ज्ञान की गंगा को कैसे अविरल प्रवाह के साथ बहाते चलें एवं शिक्षा का उत्थान, शिक्षक के सम्मान के साथ मानवता के कल्याण के लिए स्वैच्छिक स्वयंसेवी के रूप में बिना किसी लोभ–लालच, भय और दबाब के एक दूसरे का परिवार के रूप में सहयोग कैसे करते चलें।

इन्हीं सब कल्पनाओं एवं सकारात्मक विचारों के बीच एक कोशिश के रूप में आपका मिशन शिक्षण संवाद परिवार सतत रूप से ''शिक्षण संवाद'' के रूप में मासिक पत्रिका को प्रस्तुत करता आ रहा है। जिसे आप सभी के प्रेम और विश्वास ने आपसी सीखने–सिखाने का मजबूत माध्यम बना दिया है।

आशा है आप सभी का प्रेम और विश्वास हमेशा की तरह इस अंक को भी प्राप्त होगा।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	1–2
विचारशक्ति–2	3
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	4–5
मिशन गीत	6
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	7–8
अनमोल बाल रत्न	9
निन्दक नियरे राखिए	10
टी.एल.एम.संसार	11–13
कविता	14
नवाचार	15
इंग्लिश मीडियम डायरी	16–17
बाल कविता–सर्दी की रेल	18
प्रेरक–प्रसंग	19–20
बाल कविता	21
बाल साहित्य	22
बाल कहानी	23
सदविचार	24–25
रामपुर महोत्सव	26–27
फतेहपुर कार्यशाला	28
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	29
बात महिला शिक्षकों की	30
योग विशेष	31–32
खेल विशेष	33–34
माह की गतिविधि	35

उच्च शिक्षा बनाम उत्कृष्ट शिक्षा

शिक्षण संवाद

शिक्षा सदैव से ही समाज उपयोगी ज्वलंत मुद्दा रहा हैं पूरे विश्व के शिक्षाविद अपने–अपने तरीके से शिक्षा के अर्थ, शिक्षा देने के तरीके और शिक्षा के परिणामों को परिभाषित करते रहे हैं पर अभी भी हम उस शिक्षा पद्यति को नहीं खोज पाये हैं जो मनुष्य का सर्वांगीण विकास करने में अपनी भूमिका का सही–सही निर्वहन कर सकी हो। विकसित, विकासशील और अविकसित देशों के लिए अपनी वर्तमान परिस्थितियों के हिसाब से लोगों को शिक्षित करने का अलग–अलग उद्देश्य नजर आता है और यही शिक्षा को मानव विकास के उसके मूल उद्देश्य से अलग करने का सबसे बड़ा कारण भी है। अलग–अलग सामाजिक और आर्थिक वर्गों में भी शिक्षा का उद्देश्य अलग–अलग होता है। विकसित राज्यों में शिक्षा की गुणवत्ता प्रमुख उद्देश्य है वहीं अरब सहित कई मुस्लिम राष्ट्रों में धर्मिक शिक्षा के द्वारा लोगों को धर्म के प्रति ज्यादा कट्टर बनाना उनका उद्देश्य नजर आता है क्यूँकि इन अरब जैसे राष्ट्रों में रोजगार के अवसर सहज रूप से अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं और लोगों को रोजगार के लिए शिक्षा लेने की मनोदशा बचपन से नहीं होती है।

जापान जैसे देश अपना ध्यान छात्रों को अधिक तकनीकी ज्ञान देकर ज्यादा कुशल तकनीकी कामगार तैयार कर उद्योगों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में लगाते नजर आते हैं जिससे विश्व समुदाय में वह अधिक उन्नत उपकरणों से बाजार पर काबिज हो सके। जबकि भारत जैसे प्रगतिशील राष्ट्रों में रोजगार की समस्या के चलते लोगों का ध्यान रोजगारपरक विषयों का अध्ययन कर बेहतर रोजगार हासिल करना भर है।

भारत में अधिकतर लोगों का मानना है कि शिक्षा केवल इसलिए जरूरी है ताकि व्यक्ति पढ़ लिखकर कुछ बन जाए और बच्चे के जन्म लेते ही उसके परिवार के लोग उसे डॉक्टर, इंजीनियर या अफसर बनाने की घोषणा कर देते हैं। यह कुछ बनने की कल्पना उस व्यक्ति की हैसियत के हिसाब से होती है। डॉक्टर किसी भी कीमत पर अपने लड़के को डॉक्टर ही बनाना चाहता है ताकि उसके उपरांत उसका पुत्र उसके नर्सिंग होम को उत्तराधिकारी के रूप में सम्हाल सके वहीं गरीब व्यक्ति क्लास 3 और क्लास 4 की नौकरी पाने को ही संतुष्टि मानता है। बड़े व्यवसायी अपने लड़कों को केवल इतना शिक्षित करना चाहते हैं जितने में वह कारोबार आसानी से सम्हाल सके।

वास्तव में किसी व्यक्ति के जन्म लेते ही उसके माता–पिता उसे एक अच्छा इंसान बनाने की बजाय उसे एक कमाऊ इंसान बनाने का सपना देखने लगते हैं। जिसके लिए एक महँगे विद्यालय में कठिन पाठ्यक्रम और दुरूह विषयों के साथ उत्कृष्ट श्रेणी की मार्कशीट आवश्यक होती है। बालक के प्रातिक शारीरिक और मानसिक विकास की बजाय समस्त ध्यान लक्षित नौकरी के लिए जरुरी विषयों में कुशलता हासिल करने पर ही केंद्रित हो जाता है जिसके कारण अबोध बालक का शारीरिक और मानसिक विकास अवरुद्ध होने लगता है। अभिभावक की सम्पूर्ण चिंता उसके भविष्य में अर्थोपार्जन की संभावनाओं पर केंद्रित होने से वह कभी भी अपने बच्चे के अंदर छिपी विशेष प्राकृतिक विशिष्टता को पहिचान ही नहीं पाता है और अंततः वह अपने बालक को मानवीय मूल्यों से हीन एक सरकारी या निजी कंपनी का नौकर बनाकर इस समाज में छोड़ देता है।

राज्य सदैव अपने नागरिकों को कुशल कामगार के रूप में ही तैयार करना चाहते हैं इसलिए वह एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का ढाँचा तैयार करते हैं जिससे राज्य की आवश्यकता के हिसाब से

विचारशक्ति

कुशल नौकर तैयार हो सकें जिन्हें वह राज्य की व्यवस्थाओं के अनुरूप विभिन्न पदों पर नियुक्त कर, नागरिकों पर नियंत्रण रखते हुए अपनी व्यस्थाओं का सञ्चालन कर सकें। इसी योजना के तहत ही छात्रों को उस इतिहास को पढ़ने और उसकी परीक्षा में पास होने को बाध्य किया जाता है जिससे उसके जीवन को कोई बहुत अधिक व्यक्तिगत लाभ नहीं होता है। उसको मातृ भाषा के साथ अंग्रेजी जैसी भाषा भी जबरन रटवायी जाती है ताकि वह प्रशासनिक व्यवस्था में प्रभाव दर्ज करा सके पर 5 प्रतिशत सरकारी नौकरी में या निजी क्षेत्र में नौकरी का अवसर न मिलने पर यह भाषा उसके लिए बेकार हो जाती है। गणित, फिजिक्स और रसायन जैसे विषय कक्षा 8 के पाठ्यक्रम के बाद इतने क्लिष्ठ और दुरूह होते जाते हैं कि छात्र को उन्हें पढ़ने और समझने के लिए अतिरिक्त कोचिंग की जरूरत होती है और इन विषयों के आधार पर नौकरी न प्राप्त होने की दशा में जीवन में यह ज्ञान औचित्यहीन ही नजर आता है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि वर्तमान पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, कला क्राफ्ट, शारीरिक शिक्षा, खेलकूद और व्यायाम, स्काउट गाइड, पर्यावरणीय शिक्षा, संगीत बुनियादी शिल्प आदि विषयों को दोयम दर्जा प्राप्त है क्योंकि अभिभावक की नजर में यह विषय मनुष्य को सरकारी नौकरी देने में आवश्यक सहायता नहीं देते। पर आपको ताज्जुब होगा कि यही वह विषय हैं जिनकी सहायता से एक बालक को मानवीय गुणों से युक्त अच्छे नागरिक के रूप में विकसित कर समाज को आदर्श रूप में विकसित करने की आधारशिला पाठशालाओं में रखी जाती है।

वास्तव में वर्तमान समय में विद्यालय केवल राज्य की आवश्यकतानुसार आवश्यक कुशल कामगार विकसित करने के ट्रेनिंग सेंटर मात्र हैं और अभिभावकों की रूचि भी इन्हीं रोजगारपरक विद्यालयों और पाठ्यक्रमो में है। इसलिए भविष्य में राज्य को अपनी मंशा के अनुरूप कामगार तो मिलते रहेंगे पर मानवीय गुणों से युक्त नागरिकों में लगतार कमी होती जाएगी जिसके कारण भ्रष्टाचार अराजकता लूट खसोट की घटनाओं में गुणोत्तर वृद्धि भी लगभग तय है। बेहतर हो कि प्रारंभिक कक्षाओं में मानवीय मूल्यों को विकसित करने की एक मजबूत कवायद राज्यों द्वारा प्रारंभ की जाए जिससे भविष्य में राज्यों को श्रेष्ठ नागरिक मिलना शुरू हो सकें।

अवनीन्द्र सिंह जादौन (शिक्षक)
महामंत्री टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश
कोऑर्डिनेटर मिशन शिक्षण संवाद उत्तर प्रदेश

पंख न बांधो मेरे : मातृभाषा मेरा ''स्व''

यह दुःखद विडंबना ही है कि हिंदुस्तान की प्राण भाषा हिंदी के समर्थन में तर्क देने पड़ रहे हैं।

सर्वप्रथम तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि ''अंग्रेजी भाषा की शिक्षा'' और ''अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा'' दो भिन्न बातें हैं। विरोध अंग्रेजी भाषा का नहीं है, अंग्रेजी माध्यम का है।

''मातृभाषा ही शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है'',
इस बात को अनेकानेक विद्वान कह–कहकर थक गये, कितने ही आयोगों की ऐसी संस्तुतियाँ धूल चाट रही हैं, मनोवैज्ञानिक पक्षों की धज्जियाँ उड़ा दी गयीं। संसार के प्रमुखतम देशों के मातृभाषा–प्रेम को भी अनदेखा कर दिया गया क्यों? क्योंकि 200 साल की औपनिवेशिक दासता अपने नये मॉडर्न कलेवर में हम पर पहले से भी ज्यादा हावी है।

अरे, कितनी सीधी सी बात है,
अगर मुझे 4 किलो वजन (ज्ञान) उठाना हो तो मैं 10 किलो की भारी परात (भाषा) का इस्तेमाल करूँगा या 1 किलो वाली हल्की परात से काम चलाऊँगा?

मुख्य चीज है ज्ञान और मौलिक चिंतन और मेरे खून में बसी मातृभाषा ज्ञान और मौलिकता के समंदर में उतरने के लिए सर्वोत्तम नौका है, मेरी आसमानी उड़ान के लिए सर्वोत्तम पंख है।

हे राष्ट्रधीशों, हे नीति–नियन्ताओं, माँ के हर स्वरूप को पूजने वाले देश में भाषा–माँ की इतनी अवमानना क्यों?एक शिशु को उसकी माँ से क्यों जुदा करने का पाप क्यों?

''अंग्रेजी आज की जरूरत है'', ''यह वैश्विक भाषा है'', ''इस भाषा में ज्ञान का समृद्ध भंडार है'' ऐसा कहने वालों से एक प्रश्न है, **"English** इस मुकाम तक कैसे पहुँची?'' क्योंकि उसके बोलने वालों ने अपने ''स्व'' को नहीं छोड़ा। अपनी ''स्व–भाषा'' पर टिके रहने के कारण वे ज्ञान को सहजता से ले पाये, मौलिक चिंतन कर पाये, संस्कृति की जड़ों से जुड़े रहे, ज्ञानात्मक के अलावा भावनात्मक रूप से भी शक्तिशाली बन गये और दुनिया पर राज कर पाये।

यदि उनकी किसी बात का अनुकरण करना ही है तो ''स्व'' के प्रति उनकी इस निष्ठा से प्रेम करो और जब सांस्कृतिक, वैज्ञानिक आदि अनेक दृष्टियों से हमारा ''स्व'' उनसे भी कहीं अधिक श्रेष्ठ है, तब तो ''स्व'' की ऐसी उपेक्षा घोर दुर्बुद्धि की परिचायिका है।

डिब्बे का पैक्ड ब्रांडेड दूध विज्ञापन बन सकता है, माँ के दूध का विकल्प नहीं।
शानदार चिकने फर्शों के टाइल से स्टाइल आ सकता है, लेकिन उर्वरा–शक्ति तो अपनी मिट्टी में ही होती है।

ज्ञान के भूखे बच्चे को विजातीय तत्त्व की इतनी घुट्टी मत पिलाइये।
मौलिकता के उन्मुक्त आकाश में उड़ने वालों पर भाषा का बोझ मत लादिये।
उसकी कल्पना और अभिव्यक्ति को भाषाई अवरोधक लगाकर झटके मत दीजिए।
ऊपरी सजावट के आडंबर में आत्मिक शक्ति को दाँव पर मत लगाइये।

मेरी भाषा मेरी उड़ान
मुझे पुकारे आसमान

प्रशान्त अग्रवाल,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
विकास क्षेत्र–फतेहगंज पश्चिमी,
जनपद–बरेली।

व्यावसायिक प्रशिक्षणों का सदुपयोग कर बेहतर भविष्य बनाएँ शिक्षक

–डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र,
राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक/संपादक

शिक्षक एक ऐसा जिम्मेदार व्यक्ति है जिसकी छोटी चूक भी सैकड़ों विद्यार्थियों के भविष्य को अंधकार की तरफ ले जा सकती है। अतः हम शिक्षकों को अपने कार्य को बड़ी सावधानी व सटीक तरह से करने की आवश्यकता होती है। इसीलिए शिक्षक को हमेशा अपने को समाज में हो रहे बदलाव व नई चीजों को सीखने के लिए तैयार रहना और अपने को अद्यतन करते रहना चाहिए। हम शिक्षकों को न केवल स्वयं को अपडेट करना चाहिए बल्कि उसका प्रभाव उसके विद्यार्थियों तक पहुँचना चाहिए।

बेसिक शिक्षा में इस समय बदलाव का दौर चल है जहाँ हमारी सरकार अपने शिक्षकों को नए जमाने की माँग के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था लागू करने व उसके अनुसार भावी पीढ़ी को करने के लिए कई परम्परागत चीजों में बदलाव कर रही है। सरकार यह बदलाव हम शिक्षकों के सहारे करने जा रही है क्योंकि इतिहास साक्षी है कि किसी भी समाज में बदलाव का करने का सूत्रधार हमेशा ही शिक्षक रहा है और शिक्षक के अलावा कोई दूसरा यह कार्य कर भी नहीं सकता। वर्तमान में सरकार द्वारा प्रदेश के विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने हेतु हम शिक्षकों को अपडेट/प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशालाओं को आयोजन किया जा रहा है। शिक्षकों को ऐसे कार्यक्रमों में न केवल बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करना चाहिए बल्कि उसमें उसे पूरी लगन से सीखकर उसका फायदा अपने विद्यालयों में बच्चों तक पहुँचाना

समय के साथ अपने को अनवरत अपडेट करते रहें शिक्षक

चाहिए। वर्तमान में विभाग द्वारा शिक्षकों के लिए विषयगत ज्ञान व कौशल में वृद्धि करने वाले प्रशिक्षणों के अलावा उन्हें निष्ठा जैसी राष्ट्रव्यापी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, लीडरशिप, मैनेजमेण्ट, मॉड्यूल लेखन, प्रश्नपत्र निर्माण, कम्प्यूटर व आईसीटी आधारित प्रशिक्षण, गतिविधि आधारित शिक्षण हेतु विशेष प्रशिक्षण, आँकलन विशेषज्ञता, डाटा कलेक्शन व विश्लेषण, अभिलेखीकरण हेतु विभिन्न क्रिया कलापों के अलावा फिल्म व फिल्म मेकिंग जैसी व्यावसायिक दक्षताओं में प्रशिक्षित करके उन्हें भविष्य की भावी चुनौतियों के लिए तैयार किया जा रहा है। ऐसा करने का उद्देश्य इन प्रशिक्षणों से प्राप्त गुणों को लाखों विद्यार्थियों तक पहुँचाने की मंशा है।

अब जिम्मेदारी हम शिक्षकों की है कि हम नए कार्यक्रमों में पूरे मनोयोग से प्रतिभाग कर उस ज्ञान व कौशल को हम स्वयं कैसे सीखते हैं या केवल औपचारिकता करते हुए उसे बोझ समझकर टालने का प्रयास करते हैं। लेकिन जब तक हम शिक्षक स्वयं ऐसे बदलावों व जरूरतों को गम्भीरता से नहीं लेंगे तो वह चीज हमारे बच्चों में कैसे पहुँचेगी, इसकी कल्पना कैसे की जा सकती है।

उल्लेखनीय है कि किसी भी संस्थान को आगे बढ़ाने में उसमें काम करने वाले कार्मिकों को समय के अनुकूल बनाने के लिए अनवरत प्रशिक्षणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। तमाम निजी बड़े व्यावसायिक संस्थान इसके अच्छे उदाहण हैं जहाँ प्रतिवर्ष वह अपने कार्मिकों को अपडेट करने के लिए प्रशिक्षण के नाम पर लाखों रूपए खर्च करते हैं। इसका फायदा उन संस्थानों को इस रूप में होता है कि प्रशिक्षणों के बाद उनके कार्मिकों की उत्पादकता बढ़ जाती है। ऐसे में हम शिक्षक जो समाज की दिशा तय करने का कार्य करते हैं वह अपने विभाग द्वारा समय–समय पर संचालित होने वाले प्रशिक्षणों को गम्भीरता से नहीं लेंगे तो यह हम शिक्षकों व हमारे लाखों विद्यार्थियों के लिए एक आत्मघाती कदम साबित हो सकता है।

...तो आइए हम सब संकल्प लें हम शिक्षकों तथा हमारे विद्यार्थियों के लिए संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पूरी गम्भीरता एवं लगन से प्राप्त कर उसका शत–प्रतिशत अपने विद्यालयों में उपभोग करना सुनिश्चित करेंगे। इसी में हम सबका सम्मान व भविष्य सुरक्षित है।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती
9415047039
Email: sarvestkumar@gmail.com

मिशन गीत

प्रतिभा चौहान,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय गोपालपुर,
विकास खण्ड – डिलारी,
जनपद मुरादाबाद।

एक साथ कदम बढ़ाएँगे हम।
बदलाव की धारा लाएँगे हम।।

खाई जो कसम निभानी है अब,
शिक्षितों की दर बढ़ानी है अब,
शिक्षा परवान चढ़ानी है अब,
सोई शक्तियाँ जगानी हैं अब,
समाज को सभ्य बनाएँगे हम।
बदलाव की धारा लाएँगे हम।।

विद्यालय परिवेश आकर्षक हो,
उत्साह से भरे सब शिक्षक हों,
विद्या देवी के आरक्षक हों,
बालक नैतिकता के रक्षक हों,
सम्मान शिक्षक का बचाएँगे हम।

बदलाव की धारा लाएँगे हम।।

अर्थपूर्ण शिक्षण दें शिक्षाचार्य,
नवाचार हो शिक्षा में शिरोधार्य,
प्रतिबद्ध होकर करने हैं कार्य,
बच्चा–बच्चा तब बनेगा आचार्य,
विद्यालय को मंदिर बनाएँगे हम।

बदलाव की धारा लाएँगे हम।।
एक साथ कदम बढ़ाएँगे हम।।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

माह के अनमोल रत्नों को नमन

396 राजेश कुमार पूर्व माध्यमिक विद्यालय रांकौली, नंदगांव, मथुरा, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_26.html

397 अरविंद कुमार पाल (प्रधानाध्यापक) प्रा0 वि0 चितईपुर, ज्ञानपुर, भदोही
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/httpsm.html

398 सुमन पांडेय प्रा०वि० टिकरी मनौटी ब्लाक– खजुहा, जनपद– फतेहपुर
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_6.html

399 आरती सोनकर प्रा०वि० चौबेपुर खुर्द चोलापुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_20.html

400 नीलम देवी प्रधान अध्यापिका प्रा०वि० निवाडा, बागपत
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_47.html

401 नीरज कुमार (प्रभारी प्र0अ0) पूर्व मा0 वि0 भीकनपुर बझेरा, टूंडला, फिरोजाबाद
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/72-145-httpsm.html

402 अर्चना गुप्ता (स0 अ0) उ०प्रा०वि०– हाफिजपुर हरकरन, खजुहा, फतेहपुर
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_62.html

403 कमल कान्त पाल पूर्व मा0 वि0 पटनाऐरवा, ऐरवा कटरा, जनपद– औरैया
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_28.html

अनमोल बाल रत्न

विद्यार्थीः सुहानी गौतम

शिक्षक
राजकुमार शर्मा
प्रधानाध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय चित्रवार
विकास खण्ड–मऊ,
जनपद–चित्रकूट।

प्रतियोगिताः
राष्ट्रीय आविष्कार अभियान गणित विज्ञान क्विज प्रतियोगिता २०२०

स्थान–प्रथम

प्रतियोगिताः जिला स्तरीय

निन्दक नियरे राखिए

शिक्षक व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षण संवाद

वर्तमान समय में हमारी शिक्षण प्रणाली, शिक्षा नीति का उद्देश्य एकमात्र छात्र या शिक्षार्थी के सीखने के प्रतिफल में वृद्धि करना है। ऐसा इसलिए भी आवश्यक हैं क्योंकि विगत कुछ वर्षों में कई सर्वेक्षणों में यह पाया गया है कि शिक्षकों द्वारा शिक्षण के पश्चात भी छात्रों का सीखने का प्रतिफल(लर्निंग आउटकम)अपेक्षाकृत कम है।

पहले की शिक्षण विधा पारम्परिक शिक्षण, रटन्त विद्या व व्यख्यान आधारित थी। तब शिक्षण के केंद्र बिंदु में शिक्षक का होना पाया गया। किन्तु वर्तमान समय में शिक्षण का केंद्र बिंदु शिक्षक नहीं अपितु शिक्षार्थी है। तो अब यह भी आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक शिक्षार्थी के स्तर को समझते हुए रोचक शिक्षण विधा अपनाये, जिससे कि वर्तमान शिक्षा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके।

बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देने, उनमें संवेदनशीलता का विकास करने, उनके द्वारा अर्जित ज्ञान का व्यवहारिक प्रयोग करने में सक्षम बनाने में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अब जब शिक्षक इतना महत्वपूर्ण है तो शिक्षकों के उन्मुखीकरण उनके शिक्षण कौशल को विकसित करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पड़ती है।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य मुख्यतः–

1. शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण शास्त्र की समझ विकसित करना।
2. शिक्षण शास्त्र की क्षमता का विकास।
3. सीखने के प्रतिफल पर बल।
4. विद्यालय आधारित आँकलन व निर्धारण।
5. शिक्षण की नवीन विधाओं व शिक्षण में नवीन तकनीक के प्रयोग पर बल आदि होता है।

इन्ही उदेश्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमो का आयोजन होता है और इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन में केन्द्र व राज्य शैक्षिक अनुसन्धान केंद्र अच्छे खासे धन व श्रम को भी व्यय करती है। यूँ तो किसी भी प्रशिक्षण के आयोजन का उद्देश्य शिक्षा व शिक्षण में सकारात्मक परिवर्तन होता है किंतु अक्सर यह देखा जाता है कि इतने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन व उसके आयोजन में धन व्यय के पश्चात भी सापेक्ष रूप से अपेक्षित परिणाम की प्राप्ति नहीं हो पाती।

अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रायः यह देखा गया है कि या तो प्रशिक्षक शिक्षक अपनी बातें व प्रशिक्षण के उद्देश्य व क्रियान्वयन के तरीकों को प्रशिक्षु शिक्षकों तक नहीं पहुँचा पाते या कभी–कभी प्रशिक्षु शिक्षक इतने उदासीन व पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं कि वे इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लाभ को नहीं ले पाते। इसके विपरीत कुछ शिक्षक इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के उद्देश्य को न सिर्फ आत्मसात करते हैं बल्कि उसे अपने विद्यालय के बच्चों पर क्रियान्वित भी करते हैं। जिसका प्रतिफल उन्हें बच्चों के सीखने के व्यवहार में परिवर्तन के रूप में भी दर्शित होता है। वहीं कुछ शिक्षक ऐसे भी होते हैं जो इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करना भी चाहते हैं किन्तु अपने विद्यालय के आंतरिक वातावरण के कारण चाहकर भी नहीं कर पाते।

तो जब शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य इतना अच्छा है तो इसके धरातल पर क्रियान्वयन होने में इतनी कमी क्यों आ जाती है? आवश्यकता है हम सभी शिक्षकों को कि इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आत्मसात करते हुए इसके सकारात्मक पहलुओं को विद्यालय विकास में प्रयोग करने की। साथ ही शैक्षणिक प्रशासन व केंद्र/राज्य शैक्षणिक अनुसन्धान केंद्र को भी इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन पर अपनी पैनी नजर रखनी होगी ताकि इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य, होने वाले धन व्यय का बंदरबाँट न बनकर रह जाए। साथ ही साथ विद्यालय की वास्तविक स्थिति में व शिक्षण में आने वाली वास्तविक समस्याओं के संभावित समाधान को भी प्रशिक्षण में सम्मलित करना होगा। तभी हम शिक्षक प्रशिक्षण के उद्देश्य व विद्यालय और शिक्षार्थी विकास की परिकल्पना की पूर्ति कर सकेंगे।

................सकारात्मकता की ओर एक और कदम.......

श्वेता सिंह
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सिकटौर.
विकास खण्ड–खोराबार,
ज्नपद–गोरखपुर।

कक्षा-1 हेतु टी0एल0एम0

TLM का नाम – Student's Name Spelling Maker

कक्षा शिक्षण सदैव आनंददायक व रुचिपूर्ण होना चाहिए तभी बच्चे किसी भी प्रकरण को सीखने में रूचि भी लेते हैं और उसका लर्निंग आउटकम अपेक्षाकृत अच्छा प्राप्त होता है।

आवश्यकता– कक्षा–1 के बच्चों को उनके नाम की स्पेलिंग सिखाते समय जब देखा कि बच्चे **spelling** भूल जाते हैं तब सोचा कि कुछ ऐसा करें कि बच्चे आसानी से अपने नाम की स्पेलिंग याद कर लें। तब इस शिक्षण सामग्री की रूपरेखा तैयार हुई।

सामग्री– बेकार गत्ता, चावल के पैकेट की पॉलिथीन, चार्ट, टूथपिक, मार्कर, टेप एवं सजावट का सामान।

उपयोगिता एवं कार्यविधि– इसके लिए सबसे पहले तो किसी भी बच्चे के नाम की गुलाबी पत्तियों(जिन पर अल्फाबेट्स) लिखे हुए हैं, उन्हें स्पेलिंग बोर्ड में बनी खिड़कियों में अनियमित तरीके से रख देंगे। फिर उस नाम के बच्चे को बुलाकर उससे उन अल्फाबेट्स को नाम की स्पेलिंग के अनुसार व्यवस्थित करने को कहेंगे। इस प्रकार से कई बार लगाने पर बच्चे को स्पेलिंग याद हो जाएगी।

वैसे तो इस शिक्षण सामग्री को कक्षा–1 के बच्चों को उनके नाम की स्पेलिंग याद रखने हेतु बनाया गया है। परंतु इसका प्रयोग हम इंग्लिश की स्पेलिंग के **jumble words arrange** करने के लिए सभी कक्षाओं में कर सकते हैं। जिससे बच्चों को इंग्लिश स्पेलिंग अच्छे से याद हो सकती हैं।

पूजा सचान
सहायक अध्यापिका
इंग्लिश मीडियम प्राथमिक विद्यालय मसेनी
विकास खण्ड–बढ़पुर
जनपद–फर्रुखाबाद।

शिक्षकवज्र

शिक्षण संवाद

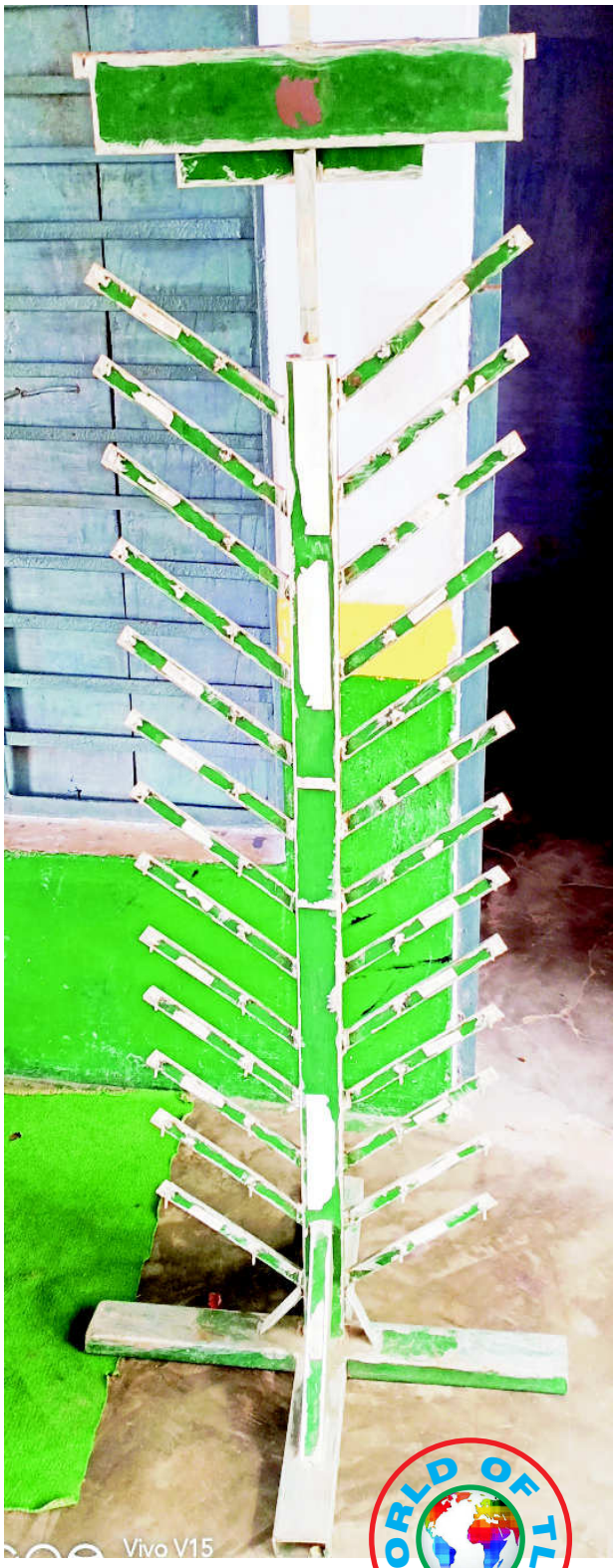

इस टी.एल.एम. उपकरण पर कुल 52 कील लगी होती हैं।

a. इस पर 26 स्पोक्स(कील) एक तरफ लगी होती है।

b. नीचे एक स्टैंड लगा होता है।

c. आकृति एक क्रिसमस ट्री जैसीहोतीहै।

कार्यविधिः फ्लैश कार्ड का प्रयोग (जो चार्ट बाजार में आसानी से मिल जाते है काट कर बनाते हैं), **working model with two wing with** फ्लैशकार्ड।

1–15 शीर्षक चार्ट में कोई एक पढ़ाने पर एक **wing** (शिक्षकवज्र की एक साइड) को शिक्षक हैण्ड तथा दूसरे को **student hand** मान लेते हैं। जो हमें पढ़ना होता है उसके **DOUBLE** पहले से ही फ्लैशकार्ड को काटकर रख लेते हैं, पहले शिक्षक हैण्ड से लगी कील पर फ्लैशकार्ड को टाँग देते हैं और चित्रों के माध्यम से उन्हें पहचान कर बोलते हैं। इसी प्रकार से हम बच्चों के साथ एक–एक करके उन्हें सिखाने का प्रयास करते हैं और टैग **student hands wing** की तरफ बच्चों से ही **tagging** करवाते हैं।

परिणाम : बहुत अच्छा आता है, बच्चे रूचि लेते हैं और अधिगम (**learning**) अच्छा होता है। इस शिक्षकवज्र पर कम करने पर **students** एवं **teacher** दोनों सक्रिय रहते हैं।

प्रत्येक बच्चे को मोनिटर करते हैं और **learning outcomes** का **register maintain** करतेहैं।

115 शीर्षक चार्ट संलग्न है।

फ्लैश कार्ड का प्रयोग करने हेतु शिक्षक वज्र विषय वस्तुः

1.**A-Z** तक का ज्ञान करना।

2. अ–ज्ञ तक का ज्ञान करना।

3. गिनतियों का ज्ञान करना।

4. पहाड़े का ज्ञान करना।

5. फलों का ज्ञान करना।

6. रंगों का ज्ञान करना।

7. महीनों का ज्ञान करना।

8. दिनों का ज्ञान करना।

9. शरीर के अंगों का ज्ञान करना।

10. राज्यों की राजधानियों का ज्ञान

11. सब्जियों के नाम।

12. जानवरों के नाम।

13. पक्षियों के नाम।

14. रोमन गिनतियों का ज्ञान।

15. अन्य आप स्वयं जोड़ सकते हैं।

16. गणित के चिन्हों का ज्ञान।

17. छोटी बड़ी संख्याओं का ज्ञान।

18. शब्दों का ज्ञान।

19.मात्राओं का ज्ञान।

20. खेलों का ज्ञान।

21.हमारे **helpers** का ज्ञान।

राजेश कुमार वर्मा
प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय मढ़की,
विकास क्षेत्र–चंडौस,
जनपद–अलीगढ़।

कविता

सच में धन्य है वह जवान

शिक्षण संवाद

पुलवामा के शहीदों को नमन

जिन्होंने किया महासंग्राम।
करके अपने प्राणों का बलिदान,
जिन्होंने दिया हमको जीवनदान।
खुश होकर हमारी खुशियों में,
जो भूले अपने कष्टों का नाम।
सच में धन्य है वह जवान,
जिन्होंने किया महासंग्राम।
अपने घर परिवार को छोड़ा,
देशभक्ति से नाता जोड़ा।
डटा रहा वह रण को थाम,
सच में धन्य है वह जवान,
जिन्होंने किया महासंग्राम।
भारत माँ की रक्षा करने का,
प्रण लिया है जिसने ठान।.
नतमस्तक हम उन चरणों में,
करते कोटि कोटि प्रणाम।
सच में धन्य है वह जवान,
जिन्होंने किया महासंग्राम।

प्रज्ञा सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मझरा इमरता,
विकास खण्ड : सैदनगर,
जनपद : रामपुर।

मिस यू कार्ड

शिक्षण संवाद

यह नवाचार अत्यंत प्रभावी है। यह मुख्य रूप से अनुपस्थित छात्रों को रोज स्कूल आने हेतु बनाया गया है। जब छात्र रोज स्कूल नहीं आते तो कुछ बच्चे और मैडम उनके घर मिस यू कार्ड लेकर जाते हैं तथा बच्चे और मैम मिलकर मिस यू सॉन्ग उस बच्चे के लिए गाते हैं, बच्चों के घर पर सभी बच्चे उस एब्सेंट बच्चे को भेजने हेतु माता–पिता और अभिभावकों से भी अपील करते हैं और उसकी स्कूल में कितनी जरूरत है, और वो कितना महत्वपूर्ण है ये गाने के द्वारा और कार्ड द्वारा प्रदर्शित करते हैं। मिस यू आवर फ्रेंड..... तुम नहीं आते तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।

प्रेयर सेशन में जो भी पिछले दिनों के अनुपस्थित छात्र हैं उनको मिस यू कार्ड दिया जाता है। सभी बच्चे मिस यू सॉन्ग गाते हैं सॉन्ग और कार्ड उस बच्चे की इंपोर्टेंस बताते हैं। उसको अपना महत्व और स्कूल में ना आने का नुकसान पता चलता है। हमने देखा कि इससे लगातार बच्चे उपस्थित होने लगे। इस नवाचार को हम ड्रॉपआउट, नामांकन आदि में भी विविध प्रकार से यूज कर सकते हैं और हमें इसके अद्भुत परिणाम मिले।

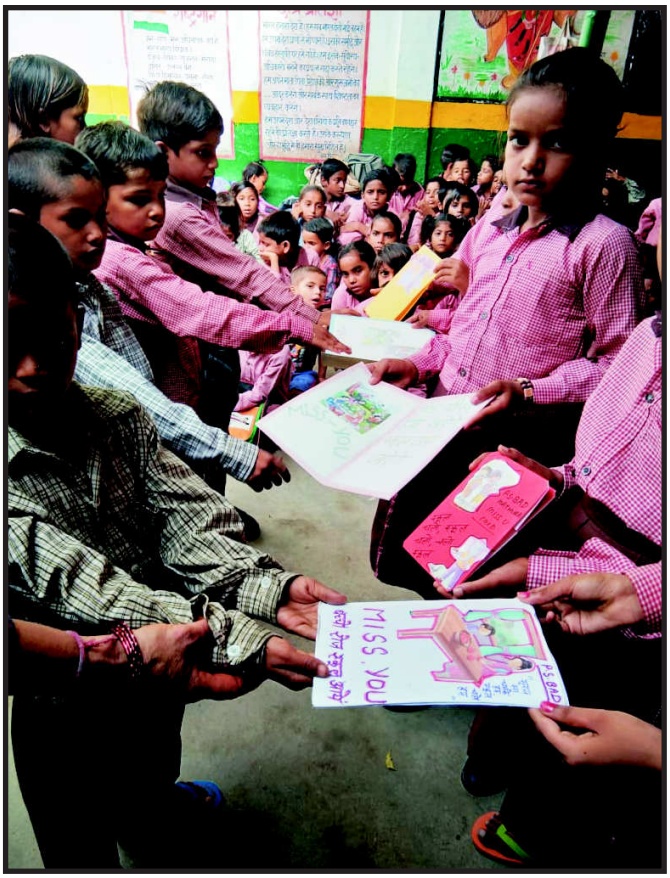

नीरज माथुरिया,
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय बाद,
जनपद–मथुरा।

English Medium Diary

Learning Maths with Fun for Early Learners

Maths anxiety is a problem across Globe. It must be tackled from Early Age- Mathematics is seen by many as hard and boring subject. But I think love for Maths is no barrier to do fun or humor although poor understanding of Maths can have unpleasant consequences.

Three out of ten students find Maths to be a tough subject. This subject of numbers can turn out to be one of the easiest and fun filled subject if taught in an innovative manner.

Learning Maths at Kindergarten and Primary Level is more challenging as compare to Upper Level.

When a subject is fun giving and engaging] students start associating with it confidently. Making Maths a Fun can be seen as a challenge but there are a lot of ways which can make it fun for Early Learners like handmade attractive TLM, picture books, flash cards, games, song activities, bar caps, pebbles, leaves and Abacus etc.

When I enter my class of Early Learners] learning with fun and engaging them in meaningful activities remains my priority. How I can get attraction of a kid for whom school is totally a new environment and get him engaged in learning maths is my sole concern.

Colorful and attractive TLM made by me for counting and recognizing numbers, Number Bar caps which can be used for recognizing and arranging numbers in a sequence] a special Number folder made by me] use of Abacus and many more innovative ideas make my class more dynamic.

At last, I would like to say that we must help our children to see the purpose of Maths.

Shilpi Upadhyay
Assistant Teacher
Primary School Biharigarh
Block: Muzaffrabad
District: Saharanpur

RECOMMENDATIONS TO STUDENTS

1. Be Honest and Truthful.
2. Be Punctual and Diligent.
3. Be Courteous and Friendly.
4. Respect all Elders.
5. Say "Please" when you want something.
6. Say "Thank you" when you receive something.
7. Help each other.
8. Don't say "I will do it tomorrow" if you can do it today.
9. Read first, understand well and then learn.
10. Pray for God's blessings and thank Him.

Thanks & Regards

SHIVANI CHAUHAN,
Assistant Teacher,
Primary School, Bhatani-2,
Block- Ghiror,
District- Mainpuri.

सर्दी की रेल

रेल चली भाई रेल चली,
सर्दी की है रेल चली।
ये है मौसम शीत ऋतु का,
रेवड़ी, गज्जक, मूँगफली का।
स्वेटर, मोजे, जर्सी, मफलर,
कपड़े पहनो सब भाई जमकर।
दाँत बजे हैं सबके कट-कट,
रोज नहाने में भी झंझट।
ज्यों-ज्यों पारा नीचे जाए,
छुट्टी को मन तरसे हाय।
दादी कहती आज ना जाओ,
स्कूल कहे भाई आ भी जाओ।
बच्चे सर्दी से घबराये,
दादीजी तब ये समझाएँ।
सर्दी बच्चों बहुत जरूरी,
अनाज उगे तब भर-भर बोरी।
सर्दी बच्चों जब नहीं पडती,
गेहूँ की बालें ना भरती।
अनाज अगर जो नहीं उगेगा,
कैसे सबका पेट भरेगा।
ईश्वर की है जो भी रचना,
उसमें हमको सहज है रहना।
कैसा भी हो मौसम चाहे,
धन्यवाद ईश्वर का गायें।
बच्चों को सब समझ में आया,
सर्दी ने उनको अब नहीं डराया।

नीलम गुप्ता
सहायक अध्यापक,
मॉडल इंगलिश मीडियम
कम्पोजिट विद्यालय गोयना,
विकास खण्ड व जनपद हापुड़।

प्रेरक प्रसंग

SAROJINI NAIDU

-Afzal Ahmad-

कोमल हृदय वाली समाज सेविका – सरोजनी नायडू

शिक्षण संवाद

13 फरवरी 1879 को जन्मी भारत कोकिला सरोजनी नायडू को हम एक उच्च कोटि की ''कवयित्री'', ''प्रथम महिला गवर्नर–उत्तर प्रदेश'' एवं जांबाज़ ''स्वतन्त्रता सेनानी'' के तौर पर जानते हैं। किन्तु उनके अन्दर एक समाजसेवी का कोमल हृदय भी छुपा था यह कम ही लोग जानते हैं। इसका उदाहरण हमें तब देखने को मिला जब प्लेग नाम की महामारी फैली थी। उस समय उन्होंने जिस प्रकार बिना किसी जाति, धर्म, लिंग भेद के अपनी सेवाऐं प्रदान की थीं, उन्हें देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गये थे। उनकी यह सेवाएँ इतनी असाधारण एवं उच्च स्तर की थीं कि ब्रिटिश हुकूमत भी उन्हें ''कैसर–ए–हिन्द'' का खिताब प्रदान करने को मजबूर हो गई थी।

उनके कोमल हृदय होने का यह एक मात्र उदाहरण नहीं है, बल्कि ऐसे अनेक मौके आये जब उन्होंने गरीब, असहाय और बेसहारा लोगों की सेवा में अपने दिन रात एक कर दिये थे। एक बार जब हैदराबाद में सैलाब आया था तो उन्होंने सैलाब में बेघर और बरबाद हुए लोगों की भी इसी प्रकार सहायता की थी। उक्त कार्य के असाधारण होने का अन्दाज़ा भी इस बात से लगाया जा सकता है कि इसके लिये उन्हें गोल्ड मेडल से सुशेभित किया गया। देश के विभिन्न शहरों में उनके नाम से सरोजनी नायडू अस्पतालों का स्थापित होना भी उनके

सेवा भाव हृदय का ही एक प्रमाण है।

बात उस समय की है जब फीरोज़ाबाद के कुछ समाज सेवियों ने यहाँ भी एक अस्पताल उनके नाम से खोलने का प्रबंध किया। जब सारी तैयारियाँ पूर्ण हो गईं और अस्पताल के उदघाटन के लिये मुख्य अतिथि का चयन किया जा रहा था तो सभी की यह इच्छा थी कि इसके लिये स्वंय सरोजनी नायडू को ही आमन्त्रित किया जाए। अतः एक प्रतिनिधि मण्डल उनसे जाकर मिला और उनसे फीरोज़ाबाद आकर सरोजनी नायडू अस्पताल का उदघाटन करने का आग्रह किया। किन्तु उन्होंने बहुत ही सरल भाव से इन्कार करते हुऐ कहा कि वे बहुत बीमार रहने लगी हैं और यात्रा करने में भी परेशानी महसूस करती हैं, इसके अतिरिक्त उनके नाम से काफ़ी अस्पताल बन भी चुके हैं। अतः बेहतर यह होगा कि किसी और के नाम से अस्पताल स्थापित हो और उन्हें क्षमा किया जाए।

प्रतिनिधि मण्डल में फीरोज़ाबाद के एक कवि बाबू लाल भी शामिल थे। उन्होंने कहा कि आपका निर्णय अन्तिम होगा। किन्तु आप केवल एक शेर सुनाने की आज्ञा दे दें।

सरोजनी नायडू की आज्ञा पाकर उन्होंने शेर सुनाया कि –

''कोई मुश्किल नहीं है मुश्किलों का हल निकल आना।
मुश्किल तो यह है कि तुम इसे मुश्किल समझते हो''।।

शेर सुनने के बाद वे मुस्कुराईं और बोलीं कि तुम जो तारीख़ और समय तय करोगे मैं पहुंच जाऊँगी। ठीक ऐसा ही हुआ और फीरोज़ाबाद के एस.एन. अस्पताल का उदघाटन उन्हीं के कर कमलों द्वारा किया गया। अफ़सोस कि 2 मार्च 1949 को ऐसे कोमल हृदय वाली समाज सेविका हमें रोता बिलखता छोड़कर ईश्वर से जा मिलीं।

अफ़ज़ाल अहमद
स0अ0
प्रा0वि0 सिविल लाइंस
ब्लॉक एवं जनपद– फीरोज़ाबाद

बाल कविता

अंधकार की ओर बचपन

बाल कविता

'क' से कबूतर ना सीखें,
सीखें 'क' से कचौरी।
'ब' से बकरी ना सीखें,
सीखें 'ब' से बिस्लेरी।

चौराहे की भीड़ में,
कचौरी लिए घूम रहे थे।
हाथों में पानी – बोतल,
पानी–पानी बोल रहे थे।

किशोरों के हाथों शोभा देवे,
पोथी और खिलौना।
किशोरों को सुनने मिले,
लोगों की अवहेलना।

मैले – कुचले कपड़े पहने,
शरीर पड़ गया काला।
चंद पैसों की लालच देवे,
दौड़ पड़ गए ठाला।

न स्वयं की चिंता,
भूखे प्यासे बोल रहे थे।
यात्रियों की चिंता किए,
बसों के पीछे दौड़ रहे थे।

एक–एक रुपया पाने को,
जान जोखिम में डाल रहे थे।
परिवार के भरण – पोषण को,
भूखे – प्यासे डोल रहे थे।

कुमार जितेन्द्र
(कवि, लेखक, विश्लेषक, वरिष्ठ अध्यापक – गणित)
साईं निवास मोकलसर,
तहसील – सिवाना,
जिला – बाड़मेर, राजस्थान।
पिन कोड 344043
मोबाइल नं0– 9784853785,
मेल आईडी – **jitendra-jb-505@gmail-com**

टिस्का आश्चर्यलोक में

शिक्षण संवाद

ईवा बेल द्वारा लिखित और सुमन बाजपेयी द्वारा अनूदित टिस्का आश्चर्यलोक में अपने शीर्षक को सार्थक करने वाली पुस्तक है। यह पुस्तक एक बाल साहित्य लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान पर रही प्रविष्टि का पुस्तकीय रूप है। टिस्का नाम की एक लड़की है जिसके माता–पिता दोनों ही नौकरी करते हैं और इसलिए टिस्का को समय नहीं दे पाते हैं। टिस्का की देखभाल उसकी नैनी छिनम्मा करती हैं जो टिस्का के माता–पिता के सामने तो अच्छे से व्यवहार करती हैं लेकिन उनके पीछे टिस्का को सताती हैं।

टिस्का अपने माता–पिता के साथ समय बिताना चाहती हैं लेकिन वे उसे नैनी छिनम्मा के साथ ही खेलने को कहते हैं। एक दिन टिस्का घर से भाग जाती है, नैनी

छिनम्मा उसका पीछा करती हैं। परन्तु पकड़ नहीं पातीं क्योंकि टिस्का एक चिड़िया का पीछा करते हुए एक अनोखे जंगल में पहुँच जाती है। यहाँ उसके पैर में काँटे चुभ जाते हैं और जूते खराब हो जाते हैं। टिस्का डर जाती है कि अब क्या होगा?तभी वहाँ एक फुट का जादूगर बौना प्रकट होता है। उस बौने के साथ टिस्का एक जादुई संसार का हिस्सा बन जाती है फिर एक से एक नयी घटनाएँ घटती हैं।

जादूगर ने टिस्का को जीवन की कौन सी सीखें दीं। क्या टिस्का वापिस अपने घर पहुँच पायी ये जानने के लिए आपको टिस्का आश्चर्यलोक को अपने पुस्तकालय में स्थान देना ही चाहिए।

बाल कहानी

बात का असर

शिक्षण संवाद

एक दिन राहुल, जोकि अब दसवीं कक्षा में पहुँच चुका था, मुझसे मिलने विद्यालय आया। मैंने उससे पूछा– ''पढ़ाई कैसी चल रही है राहुल?'' अच्छी चल रही है सर जी। उसने जवाब दिया। मोहित और संतोष कैसे हैं? पढ़ रहे हैं न!(ये बच्चे पढ़ने में बहुत अच्छे थे, छठीं कक्षा से लेकर आठवीं तक टॉप पर रहे तथा तीनों जी आई सी की कक्षा 9 की प्रवेश परीक्षा में भी टॉप पर थे)मोहित तो पढ़ाई कर रहा है सर जी। पर संतोष पढ़ाई छोड़कर दिल्ली चला गया। ''संतोष दिल्ली चला गया!!!'' कब गया? पर क्यों?? वो तो पढ़ने में बहुत अच्छा था। मैंने राहुल से पूछा। अभी पिछले महीने सर जी, घरवालों से नाराज होकर। राहुल ने बताया। मैं उसके बारे में सोचने लगा और फिर अपनी क्लास में चला गया। कुछ दिन बीत गए।

एक दिन मोबाइल पर किसी अनजान नंबर से फोन आया। मैंने जैसे ही फोन रिसीव किया, दूसरी तरफ से आवाज आई, ''नमस्ते सर जी! आप कैसे हैं? मैं सन्तोष बोल रहा हूँ। ''नमस्ते बेटा!कैसे हो? कहाँ हो इस समय? घर वालों को बिना बताये क्यों चले गए? अब पढ़ना नहीं है क्या??? कई सवाल मैंने उससे कर दिये। सर मैं दिल्ली में हूँ। नौकरी कर रहा हूँ।''

नौकरी!!! नौकरी कर रहे हो!!! अभी पढ़ने–लिखने की उम्र है तुम्हारी, नौकरी की नहीं। अच्छा ये बताओ कि घर में बिना किसी को बताए क्यों चले गए? मैंने पूछा।

अब क्या बताऊँ सर! घर में कुछ बात हो गयी और मैं दिल्ली चला आया। मैंने उसे समझाया कि, ''हमारे माता–पिता, भाई–बहन या घर के बड़े लोग अगर किसी बात को लेकर हमें समझाते हैं तो वो हमारी भलाई के लिए ऐसा करते हैं। हमें इसका बुरा नहीं मानना चाहिए।''

क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे घर वाले कितना परेशान हैं? अब जल्दी से घर आ जाओ। बाल श्रम को लेकर मेरे मन में तरह–तरह के प्रश्न उठ रहे थे। वैसे दिल्ली में कौन सी नौकरी करते हो? किसके साथ रहते हो? पैसे कितने मिलते हैं? जिज्ञासावश मैंने उससे पूछा।

उसने बताया कि गाँव के ही दो लोग और भी साथ में हैं। ट्रैक्टर चलाता हूँ सर। सात हजार रुपये महीने के मिल जाते हैं। मुझे बहुत दुःख हुआ सुनकर। मैं सोचने लगा कि अभी तो यह मात्र पन्द्रह वर्ष का है। बहुत मेहनत कराते होंगे इससे वहाँ। फिर मैंने उससे कहा कि–पहले पढ़–लिख लो। फिर जी भर के नौकरी कर लेना। तुम पढ़ने में बहुत अच्छे हो। अपनी पढ़ाई पूरी कर लो, फिर तुम्हें अच्छी नौकरी मिल जाएगी।

वापस आ जाओ बेटा। उसने कहा–सर जी कुछ दिन बाद मैं जरूर आ जाऊँगा।

फिर उसके हर दूसरे–चौथे दिन फोन आते रहते थे। मैं भी उससे बात करता और समझाता रहता था। एक दिन उसने मुझे फोन किया और बताया कि सर मैं वापस घर आ रहा हूँ। अब पहले अपनी पढ़ाई पूरी करूँगा, फिर नौकरी। घर आने के अगले दिन बाद वो मुझसे मिलने स्कूल आया। उसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। अब वो अपनी पढ़ाई पूरी कर रहा है।

(मेरे विद्यालय के एक होनहार बच्चे के जीवन पर आधारित सच्ची कहानी)

ओमकार पाण्डेय, सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय किरतापुर,
विकास खण्ड–सकरन,
जनपद–सीतापुर।

सदविचार

स्वामी दयानंद सरस्वती जी के कुछ विचार

शिक्षण संवाद

स्वामी दयानंद सरस्वती जी का जन्म 1824 में गुजरात के टंकारा नामक स्थान में हुआ था। उनका जन्म नाम मूलशंकर था। उनका परिवार शैव सम्प्रदाय का अनुयायी था।

धर्म सुधार हेतु अग्रणी रहे दयानंद सरस्वती जी ने 1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी। वेदों का प्रचार करने के लिए उन्होंने पूरे देश का दौरा करके पंडित और विद्वानों को वेदों की महत्ता के बारे में समझाया।1886 में लाहौर में स्वामी दयानंद सरस्वती जी के अनुयायी लाला हंसराज ने दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की थी।

उन्होंने जातिवाद और बाल विवाह का विरोध किया और नारी शिक्षा तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया। उनके द्वारा लिखी गई कुछ प्रचलित पुस्तकें हैं ––
सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेद भूमिका, वेदभाष्य, संस्कार निधि, व्यवहार भानू आदि।
30 अक्टूबर 1883 को अजमेर, राजस्थान में किसी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को खाने की वस्तु में जहर खिला दिया था जिस कारण उनका स्वर्गवास हो गया था। स्वामी जी के कुछ अनमोल विचार प्रस्तुत हैं––

1. सदा याद करो भगवान को, वहीं करता दूर सबकी मुश्किल, हर दुख बन जाता सुख, जो चाहो होता वो हासिल।

2. काम करने से पहले जो सोचे वो है – बुद्धिमान, वो है – सतर्क काम करते हुए जो सोचे, काम करने के बाद सोचे वो है – बुद्धु। सदा सोचो, बड़ा सोचो स्वामी जी ने है सिखाया।
3. अगर दोगे तुम दुनिया को अपना बेस्ट, तो मिलेगा तुमको भी वापिस बेस्ट, लालच कभी न करना तुम, ये है तुम्हारा सबसे बड़ा रोग।
4. जो इंसान सबसे कम ग्रहण करता है, सबसे ज्यादा अपना योगदान देता है, आखिर जीवन तो है वो ही, जिसमें हो आत्मविश्वास निहित।
5. आपके पास जो सबसे अच्छी चीज है उसे दुनिया को दो, आप देखेंगे कि आपको भी दुनिया से सबसे अच्छी चीज मिल रही है।
6. वेदों में वर्णित सार का पान करने वाले ही ये जान सकते हैं कि जिंदगी का मूल बिन्दु क्या है।
7. क्रोध का भोजन विवेक है, अतः इससे बचकर रहना चाहिए क्योंकि विवेक नष्ट हो जाने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है।
8. क्षमा करना सबके बस की बात नहीं क्योंकि ये मनुष्य को बहुत बड़ा बना देता है।
9. सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. जिसने गर्व किया, उसका पतन अवश्य हुआ है।
11. मानव जीवन में तृष्णा और लालसा है और ये दुःख के मूल कारण है।
12. लोभी वो अवगुण है जो दिन प्रतिदिन तब तक बढ़ता ही जाता है, जब तक मनुष्य का विनाश ना कर दे।
13. जो इंसान हर काम से संतुष्ट हो जाए वही इंसान इस दुनिया का सबसे खुशनसीब इंसान होता है।
14. अज्ञानी होना गलत नहीं है अज्ञानी बने रहना गलत है।
15. आत्मा अपने स्वरूप में एक है, लेकिन उसके अस्तित्व अनेक हैं।
16. जिव्हा को उसे व्यक्त करना चाहिए जो हृदय में है।
17. लोभ कभी समाप्त न होने वाला रोग है।
18. राष्ट्रवाद –– कोई भी उसे छू नहीं सकता क्योंकि ये सहानुभूति है।
19. आत्मा, परमात्मा का ही एक अंश है जिसे हम अपने कर्मों द्वारा गति प्रदान करते हैं। फिर आत्मा हमारी दशा तय करती है।
20. दुनिया में सबसे बढ़िया संगीत यंत्र इंसान की आवाज है।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय निजामपुर,
विकास खण्ड – सिकंदराबाद,
जनपद – बुलंदशहर।

रामपुर महोत्सव और मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का योगदान

शिक्षण संवाद

जिला अधिकारी आञ्जनेय कुमार सिंह के मार्गदर्शन में 23 दिसंबर से 18 जनवरी तक रामपुर महोत्सव का आयोजन किया गया। रामपुर महोत्सव का उद्घाटन सरदार बलदेव सिंह औलख द्वारा किया गया। रामपुर महोत्सव में बेसिक शिक्षा विभाग के द्वारा शैक्षिक अधिगम शिक्षण सामग्री के चार्ट्स और मॉडल का प्रदर्शन किया गया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्रीमती ऐश्वर्या लक्ष्मी के मार्गदर्शन में बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों के द्वारा स्टॉल को तैयार किया गया।

शिक्षण अधिगम सामग्री आधारित टीएलएम और मॉडल पूर्व माध्यमिक विद्यालय भोलापुर की शिक्षिका शालिनी पांडे, मॉडल प्राइमरी स्कूल पंजाब नगर की शिक्षिका रीता सिंह, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय नगर क्षेत्र की शिक्षिका मीना शर्मा द्वारा निर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री के मॉडल और चारों को जिलाधिकारी महोदय और रामपुर की जनता के द्वारा सराहा गया। बेसिक शिक्षा द्वारा लगाए गए स्टॉल में बेसिक शिक्षा से जुड़ी सभी नीतियों को फ्लैक्स के माध्यम से आम जनमानस को बताया गया ताकि विद्यालयों में अधिक से अधिक नामांकन हो सके। बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों को द्वारा रामपुर महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया गया।

रामपुर महोत्सव में बेसिक शिक्षा के बच्चों ने भी बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया और जिले के श्रेष्ठ पब्लिक स्कूलों के सामने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। मॉडल उच्च प्राथमिक विद्यालय घाटमपुर, मॉडल प्राथमिक विद्यालय सीगन खेड़ा फर्स्ट, मॉडल प्राथमिक विद्यालय पंजाब नगर, पूर्व माध्यमिक विद्यालय भोलापुर के बच्चों ने सांसतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर जिलाधिकारी महोदय और आम जनता की वाहवाही लूटी। मॉडल प्राथमिक विद्यालय सोना के बच्चों के द्वारा योगा कार्यक्रम से सभी लोग

अचंभित रह गए।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय रूपपुर के शिक्षक शिवकुमार शर्मा और उनकी टीम ने कठपुतली के माध्यम से शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक किया। पूर्व माध्यमिक विद्यालय भोलापुर की शिक्षिका शालिनी शर्मा ने महिला सशक्तिकरण पर आधारित नृत्य के माध्यम से जिलाधिकारी और बेसिक शिक्षा अधिकारी दोनों की वाहवाही लूटी। रामपुर महोत्सव में आयोजित शिक्षक सम्मेलन में राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका रेनू सिंह को माध्यमिक शिक्षा मंत्री गुलाब देवी ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। अधिकारियों प्रधान चारों और शिक्षकों के गीत कार्यक्रम में बेसिक शिक्षा के शिक्षकों और शिक्षिकाओं ने अपने हुनर का लोहा मनवाया। प्राथमिक विद्यालय मथुरा अमृता की शिक्षिका प्रज्ञा सिंह बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर आधारित गीत ओ री चिरैया मॉडल प्राथमिक विद्यालय मुड़िया खेड़ा शिक्षक मोहित कुमार सक्सेना की मधुर आवाज में उप जिलाधिकारी प्रशासन अजय कुमार गुप्ता से प्रशंसा पाई। रामपुर महोत्सव के समापन में जिलाधिकारी महोदय द्वारा महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले विद्यालयों के शिक्षकों और गीत कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले शिक्षकों को महोत्सव का प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

दीपक पुण्डीर
सहायक अध्यापक
पू0मा0वि0 ढक्काहाजी, सैदनगर
जनपद – रामपुर

जनपद फतेहपुर शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=2556480544629527&id=1598220847122173

शिक्षण संवाद

दिनांक 29.01.2020 को जनपद फतेहपुर के ठाकुर युवराज सिंह डिग्री कॉलेज के हॉल में मिशन शिक्षण संवाद की जनपदीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। मिशन शिक्षण संवाद एक ऐसा मंच है जो कि शिक्षकों को स्वयं से प्रेरित करके बेसिक शिक्षा में उत्थान के लिए अनवरत प्रयासरत रहा है। इस मंच के माध्यम से जिले के ही नहीं प्रदेश के शिक्षक भी अपने विद्यालय में की जा रही गतिविधियों को लगातार एक–दूसरे से साझा करते रहते हैं। कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री संजीव कुमार जी जिलाधिकारी फतेहपुर तथा विशिष्ट अतिथि श्री शिवेंद्र प्रताप सिंह जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी फतेहपुर द्वारा आतिथ्य स्वीकार करते हुए शिक्षकों द्वारा किए जा रहे प्रेजेंटेशन को सराहा गया। साथ में जिलाधिकारी द्वारा शिक्षकों के टी. एल. एम. स्टाल का निरीक्षण किया गया उसकी भूरी – भूरी प्रशंसा की।

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा आयोजित कार्यशाला में शिक्षकों में बदलाव का आह्वान करते हुए कहा कि शिक्षक समाज के मार्गदर्शक के रूप में रहे हैं। अतः बदलाव में ऐसे प्रोग्रामों की और अधिक आवश्यकता है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा बताया गया कि सरकारी विद्यालयों में अत्यंत कमजोर वर्ग के बच्चे आते हैं, उनके परिवारों की कम जागरूकता के कारण हम शिक्षकों की ओर से अधिक प्रयास करने होंगे।

इस कार्यशाला में राज्य पुरस्कार सम्मानित श्रीमती नीलम भदौरिया एवं आसिया फारूखी को भी प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस जनपदीय कार्यशाला में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान से उपस्थित प्रवक्ता एवं जिला समन्वयक महोदय के साथ–साथ कई ब्लॉक के खंड शिक्षा अधिकारी भी उपस्थित रहे।

मिशन शिक्षण संवाद की कार्यशाला में बबलू सोनी, प्रवीण द्विवेदी, धर्मेंद्र उत्तम, मनीष, महेंद्र, अर्चना, मीनू, सूर्य प्रकाश, प्रतिभा, गीता यादव, अंबिका मिश्रा इत्यादि शिक्षकों ने सहयोग दिया।

संकलनः–
टीम मिशन शिक्षण संवाद

साभारः
नीलम भदौरिया, प्रधानाध्यापक

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

शिक्षण संवाद

404 अमृता सिंह, प्राथमिक विद्यालय मदरवॉ, काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_80.html

बात महिला शिक्षकों की

शिक्षण संवाद

शिक्षक के व्यक्तित्व का बच्चों के दिल और दिमाग पर एक गहरा असर होता है। महिला शिक्षिका में तुलनात्मक रूप से ममता, सहनशीलता और धैर्य अधिक होता है। वह छोटे बच्चों से उनकी गलती हो जाने पर डाँट डपटने की बजाय बच्चे को प्यार से धैर्य के साथ समझाती है। बच्चे के बार–बार समझ ना आने पर भी, गलती को आगे कैसे ठीक करना है यह बताती है। शिक्षिका की दी हुई सीख बच्चों के भविष्य को सुदृढ़ और खुशहाल बनाने में सहायता करती है।

महिला एक शिक्षिका के रूप में बच्चों की पढ़ाई को रुचिकर बनाती है। शिक्षिका अपने छात्रों के लिये कविता गाकर सुनाती हैं बच्चे भी कविता में आनंद लेते हैं।

वर्ष 2012 में मेरा ट्रान्सफर हापुड़ के प्राथमिक विद्यालय जोगीपुरा में हो गया। मैंने देखा कि छात्राएँ कोई भी देशभक्ति गीत गाने की जगह केवल उसे पढ़कर सुनाती थीं। इस बार स्वतंत्रता दिवस पर मैंने बच्चों को गीत गाकर सुनाया जो बच्चों को अच्छा लगा। बच्चों ने भी गीत को गाकर सुनाया मेरा ये अनुभव बहुत अच्छा रहा। अब हमारे विद्यालय के बच्चे गीत प्रस्तुत करने में कुशल हो गए हैं। समस्त स्टाफ और गाँव वाले भी बच्चों की प्रस्तुति की सराहना करते हैं।

कक्षा में प्रत्येक बच्चे की रुचि और क्षमता अलग होती है। कोई बच्चा पढ़ाई में अच्छा होता है दूसरा कोई खेल में अच्छा होता है। कोई बच्चा कला में अच्छा होता है या कोई बच्चा गायन में अच्छा होता है। शिक्षिका उनकी छिपी हुई प्रतिभा को पहचान कर उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। बच्चे की प्रथम पाठशाला उसका घर होता है इसके बाद विद्यालय में शिक्षा और अनुशासन सीखता है। बच्चों का झगड़ा हो जाने पर शिक्षिका बच्चों को आपस में दोस्तों के साथ मिलजुल कर खेलना सिखाती है। बच्चे शिक्षिका से जल्दी ही घुलमिल जाते हैं और अपनी समस्याएँ आसानी से बताते हैं। जिससे बच्चों का विद्यालय में ठहराव बढ़ता है। बच्चों के अभिभावक भी शिक्षिका पर भरोसा करते है। शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिये बेटियों को शिक्षित करना आवश्यक है। शिक्षिका बच्चों के अभिभावकों को बेटियों को विद्यालय भेजने के लिये प्रेरित करती है। शिक्षिका बच्चों को ज्ञान अर्जित करने के लिये प्रेरित करती हैं क्योंकि ज्ञान वह कवच है जो जीवन में आने वाली कठिनाईयों से रक्षा करता है। ज्ञान का धनी व्यक्ति हमेशा ही सम्मान और आदर पाता है। अपने ज्ञान की कीर्ति फैलाने वाले महापुरुष हमेशा ही याद किए जाते हैं।

"When you chase knowledge] numbers will always follow-"

प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका बच्चों को पढ़ाई के साथ उसे कला, क्राफ्ट, गायन, नृत्य, खेल और नैतिकता भी सिखाती है ताकि बच्चे का सर्वांगीण विकास हो सके और वह समाज में एक अच्छा व्यक्ति बन सके। प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

प्रीति रानी
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय जोगीपुरा,
जनपद–हापुड़।

कपोत आसन की उत्पत्ति एवं उसका अर्थ

शिक्षण संवाद

यहाँ संस्कृत शब्द कपोत का अर्थ कबूतर से है। इस आसन को अंग्रेजी में pigeon pose के नाम से जाना जाता है। इस आसन में स्थिति कबूतर के समान हो जाती है इसी से इसका नाम कपोत आसन पड़ा। इस आसन को करने से आपका शरीर लचीला होता है।

कपोत आसन करने की विधि –

1– सर्वप्रथम पैरों को आगे पीछे फैलाते हुए स्ट्रेच करें।
2– आगे का पैर एल आकार में मोड़ते हुए पीछे की ओर रखें।
3– पिछला पैर ऊपर की ओर मोड़ते हुए आगे लाएँ।
4– अपने सिर एवं शरीर को पीछे की ओर ले जाएँ।
5– पीछे वाले पैर को पकड़ कर होल्ड करें।
6– धीरे–धीरे पैर को छोड़कर प्रारंभिक स्थिति में वापस आएँ शीघ्रता ना करें।

कपोत आसन करने के लाभ –

1– यह शरीर के नीचे के हिस्से को खिंचाव में सहायता करता है।
2– पेट के अंगों की मसाज होती है जिससे पाचन क्रिया में सुधार होता है।
3– कपोत आसन करने से पीठ की समस्या मैं खासकर साइटिका जैसी गंभीर बीमारी में लाभ होता है।
4– माँसपेशियों का तनाव कम होता है।
5– कपोत आसन में पैरों को ज्यादा से ज्यादा स्ट्रेच करने से तनाव तथा चिंता की समस्या से छुटकारा मिलता है।
6– कपोत आसन को करने से पेट तथा जांघ के बीच का भाग मजबूत होता है।
7– यह मूत्र एवं प्रजनन प्रणाली के कार्यों में भी सुधार करता है।
8– कपोत आसन करने से ब्लड प्रेशर संबंधी बीमारी में लाभ होता है तथा ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है।

योग–विशेष

कपोत आसन करने में बरती जाने वाली सावधानियाँ –

1– इस आसन को करने के लिए नियमित अभ्यास तथा योग प्रशिक्षक का मार्गदर्शन आवश्यक है।

2– इस आसन में जल्दबाजी न करें क्योंकि शरीर की माँसपेशियों को लचीला होने में समय लगता है।

3– अगर आपको टखने घुटने में काफी समय से परेशानी है या कमर में किसी प्रकार की चोट हो तो इस आसन को ना करें।

4– यह आसन गर्भवती महिलाओं के लिए नहीं है।

रंजीता चौहान
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय धारक नगला,
विकास खण्ड–डिलारी,
जिला–मुरादाबाद।

टेबल टेनिस

टेबिल टेनिस एक बेहद प्रचलित खेल है। इसे पिंग पोंग भी कहा जाता है। यह इंडोर गेम है। इसकी शुरुआत इंग्लैंड में हुई थी। आज यह कई देशों में लोकप्रिय है।

टेबिल टेनिस के नियम

टेबिल टेनिस एक समय में दो (एकल) या चार (युगल) खिलाड़ियों के बीच खेला जाता है। यह खेल लकड़ी की सतह पर खेला जाता है। टेबिल की लंबाई नौ फुट चौड़ाई पाँच फुट और ऊँचाई ढाई फुट होती है। टेबिल के चारों ओर एवम् बीच में सफेद रेखा बनी होती है। बीच की रेखा युगल खेल में इस्तेमाल होती है। एकल में खिलाड़ी पूरी टेबिल का इस्तेमाल कर सकते हैं। टेबिल के बीच में 6 इंच ऊँचा जाल लगा होता है। इस खेल में

Kamlesh Mehta

सैलुलॉयड की सफेद गेंद का प्रयोग होता है। इस खेल में गेंद पर रैकेट से प्रहार किया जाता है।

खेल –

एकल या युगल खेल में सर्वर सार्विस करता है रिसीवर इसे वापस पाले में डालता है। यदि किसी की गेंद टेबिल के बाहर चली जाती है तो विपक्षी खिलाड़ी को एक प्वाइंट मिल जाता है। सर्वर लगातार पाँच सर्विस कर सकता है। इसके पश्चात विपक्षी पाँच सर्विस करता है।

परिणाम–

टेबिल टेनिस खेल में गेम वह खिलाड़ी जीतता है जो 21 अंक प्राप्त कर लेता है। मैच एक गेम, तीन गेम या पाँच गेम का हो सकता है।

ई. ए. जॉर्ज एंथोनी,
प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय काशीनगर,
विकास खण्ड–बबीना,
जनपद–झाँसी।

माह फरवरी 2020 की गतिविधि

Series of Classroom Experiments "Reach to Each"

"छाया"

शिक्षण संवाद

आपको शायद याद न हो कि आप अपने बचपन में अपनी परछाईं के पीछे खूब भागे थे। आपने रात में रोशनी के सामने हाथों को कई बार लाकर उँगलियों से परछाईं बनायी होगी। कभी बड़ी तो कभी छोटी, कभी गाढ़ी काली तो कभी भूरी। परछाईं के साथ आपने जमकर मस्ती की होगी। कुछ बच्चे तो अपनी ही परछाईं देखकर डर जाते हैं। तो आईए जानते हैं परछाईं के पीछे का विज्ञान...

क्याकरना है ? : प्रकाश (लाइट) स्रोत के आगे अवरोध रखकर छाया बनाना।

क्या चाहिए? : मोमबत्ती, माचिस व एक छोटी गेंद

कैसे करना है?

1. कमरे में खिड़कियाँ बंद कर अन्धेरे जैसा माहौल बनायें।
2. माचिस से मोमबत्ती जलाकर दीवार या किसी पर्दे के समीप रखें।
3. मोमबत्ती व दीवार / पर्दा के बीच गेंद रखें।
4. क्या दिख रहा है – छाया।
5. ध्यान से देखें तो छाया भी दो तरीके की दिख रही होगी।
6. बहुत अंधेरा वाला भाग – प्रच्छाया (**umbr**) और आंशिक अंधेरा वाला उपछाया (**penumbra**) होता है।
7. गेंद को आगे – पीछे करके देखें।
8. क्या दिखा – छाया का आकार छोटा – बड़ा।

अपारदर्शी वस्तुओं से छाया सदैव काली तथा द्विविमीय होती है।

क्या कर लिया?

आपने गेंद की छाया को बनाकर प्रच्छाया और उपछाया को समझ लिया। शाबास! आपने कर दिखाया। है न आसान!!!! आया मजा! तो फिर आप अलग अलग पारदर्शी, अपारदर्शी व अल्प पारदर्शी वस्तुओं से भी छाया बनाकर देखें।

इनसे भी कर सकते हैं : आप पेन, पेन्सिल या अन्य की भी छाया बनायें।

चर्चा के बिंदु :

प्रच्छाया, उपछाया, पारदर्शी, अपारदर्शी, अल्प पारदर्शी।

ध्यान रखें :

1. मोमबत्ती को पूरी सावधानी से जलायें।
2. उसे किसी समतल स्थान पर ही रखें।
3. ज्वलनशील पदार्थों से दूर ही इस प्रयोग को करें।

मनीष कुमार
राज्य अध्यापक पुरस्त
स.अ. / राष्ट्रीय विज्ञान संचारक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवगंज, सहार
Youtube :GyanKa Yan : Email: manishyadav1407@gmail.com

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात